सुसमाचार प्रचार का भरपूरी से आरम्भ (2:14-36)

कई बार हम कहते हैं, ''पतरस ने सुसमाचार के संदेश का सबसे पहले प्रचार किया।'' इस वाक्य को मान्यता देने की आवश्यकता है। ''सुसमाचार'' का अर्थ है ''शुभ समाचार।''[1] मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों को ''*सुसमाचार* के वृत्तांत'' कहा जाता है (मरकुस 1:1 पर ध्यान दें); अर्थात, वे यीशु के जीवन और उसकी सेवकाई का शुभ संदेश बताते हैं। यीशु के जन्म को ''आनन्द का सुसमाचार'' कहा गया (लूका 2:10)। यीशु ने अपनी निजी सेवकाई में सुसमाचार (लूका 4:18; मत्ती 11:5; लूका 7:22; 9:6; 20:1 भी देखें), विशेषकर ''राज्य का सुसमाचार'' सुनाया (मत्ती 4:23; 9:35; 24:14; मरकुस 1:14, 15 भी देखें)। उसने यह शुभ संदेश सुनाया कि राज्य ''निकट'' आ पहुंचा है(मत्ती 4:17)।

क्योंकि प्रेरितों 2 अध्याय की घटना से पहले ''सुसमाचार प्रचार'' और ''सुसमाचार'' का कई बार उल्लेख हुआ है, इसलिए यह कहना बेहतर होगा कि *भरपूरी* से सुसमाचार का प्रचार सर्वप्रथम पतरस ने ही किया। 1 कुरिन्थियों 15:1-4 में, पौलुस ने बताया कि सुसमाचार के संदेश का सार मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना ही है। इस महान सच्चाई का प्रचार पूरे ज़ोर से तब तक नहीं हो सकता था जब तक मसीह मृतकों में से जी न उठता। पतरस ने यह प्रचार पहली बार प्रेरितों 2:14-36 में किया।

जब मत्ती 16 में पतरस ने मसीह के बारे में अंगीकार किया तो यीशु ने उसके साथ वायदा किया कि उसे यह संदेश देने का सुअवसर प्राप्त होगा। पतरस की तस्वीर अपने मन में उतारिए: वह काफी लम्बा आदमी रहा होगा जो अपने आसपास नज़र दौड़ा रहा, लम्बा सा तन कर सीधा खड़ा है, वह भीड़ के बैठने की प्रतीक्षा कर रहा है, ताकि वह अब तक के सबसे महान संदेश का प्रचार कर सके। कुछ सप्ताह पूर्व उसने यीशु का इन्कार किया था; अब वह उसकी घोषणा करने वाला है!

आपने पतरस के ये शब्द कई बार सुने होंगे, परन्तु अब उन पर ऐसे ध्यान दें जैसे आप उन्हें पहली बार ही सुन रहे हों। यह ''सुसमाचार का प्रथम संदेश'' सर्वोत्तम है। यह उस अकल्पनीय दोष का संदेश है जिसके दण्ड के विपरीत अविश्वसनीय अनुग्रह की पेशकश की गई।

पतरस ने भीड़ के इस आरोप को कि उसने और दूसरे प्रेरितों ने मदिरा पी हुई है, रद्द करते हुए आरम्भ किया:

पतरस, उन ग्यारह[2] के साथ खड़ा हुआ, और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि ''हे यहूदियो और यरूशलेम के सब रहने वालो,[3] यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसे तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है'' (पद 14, 15)।

''पहर दिन'' सुबह के नौ बजे का समय था।[4] जहां मैं पला-बढ़ा हूं, वहां पतरस के इस तर्क का कोई अर्थ नहीं होगा क्योंकि वहां तो लोग दिन-रात पीये रहते हैं। किन्तु, पतरस जिन लोगों में प्रचार कर रहा था, वहां पर यह तर्क बहुत मायने रखता था, क्योंकि कट्टर रूढ़िवादी यहूदी सब्त के दिन या किसी अन्य पवित्र दिन सुबह 9 बजे से पहले कुछ भी खाते-पीते नहीं थे।[5]

योएल की भविष्यवाणी (2:16-21)

फिर पतरस ने वहां एकत्र हुए लोगों को विस्तार से बताया कि जो कुछ उन्होंने देखा और सुना, वह मदिरा की आत्मा का उंडेला जाना नहीं था बल्कि ईश्वरीय आत्मा का उंडेला जाना था। उसने उन्हें बताया कि, '' ... यह वह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा'' (पद 16, 17)। पतरस ने यह हवाला योएल 2:28-32 से लिया था।[6] पतरस ने पहले ''अन्त के दिनों'' की बात की।[7] यहूदी सोच के अनुसार ''अन्त के दिन'' मसीह के शासन की ओर संकेत था।[8] वस्तुत: पतरस ने कहा कि, ''जिस समय का आप सदियों से इन्तज़ार कर रहे थे वह यही है अर्थात अन्त के दिन आ पहुंचे हैं!'' बाद में, इब्रानियों के लेखक ने कहा '' ... परमेश्वर ने ... *इन दिनों के अन्त में* हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं ... '' (इब्रानियों 1:1, 2)।[9] कइयों के विचार से ''अन्त के दिन'' अभी आने हैं,[10] किन्तु हम तो अब ''अन्त के दिनों'' में रह रहे हैं।[11] मसीही युग मनुष्यजाति का न्याय करने मसीह के वापस आने से पहले का अन्तिम युग है।

योएल की भविष्यवाणी के अनुसार, ''अन्त के दिनों'' में क्या होना था?

परमेश्वर कहता है, कि ''अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा मनुष्यों पर उंडेलूंगा[12] और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे;[13] बरन मैं अपने दासों[14] और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यवाणी करेंगे'' (पद 17, 18)।

यहूदी लोग जानते थे कि जब मलाकी ने धर्मशास्त्र को पूरा करने के बाद अपनी कलम रख दी, तो पृथ्वी पर से भविष्यवाणी का दान अलोप हो गया था, और ऐसा ''अन्त के दिनों'' में मसीह के आने तक रहना था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार को सुनकर उनकी उत्सुकता बढ़ गई थी, क्योंकि वे देख रहे थे कि भविष्यवाणी फिर से होने लगी

थी। पतरस ने उनको बताया कि उन्होंने जो सीमित रूप देखा था वह यूहन्ना और यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान कुछ लोगों के लिए था, परन्तु अब उसका क्षेत्र बढ़ रहा था। आंधी की आवाज़, आग का दर्शन और बोलियां बोला जाना, सब आत्मा के उंडेले जाने का पता देते थे। योएल ने भविष्यवाणी की थी कि आने वाले दिनों में,[15] ये अद्भुत दान, अतीत की भांति कुछ लोगों के लिए नहीं, बल्कि बिना लिंग भेद,[16] उम्र[17] या सामाजिक रुतबे का ध्यान किए – ''सब मनुष्यों'' को दिए जाएंगे।[18] (ध्यान देने वाली बात यह है कि ''सब मनुष्यों'' से भाव पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति से नहीं था।[19] शब्द ''सब मनुष्यों'' को सारी मनुष्यजाति के प्रतिनिधियों के एक समूह के लिए प्रयोग किया गया।)

अपनी बाइबल में आयत 17 और 18 में ''भविष्यवाणी'' शब्द को रेखांकित कर लें। भविष्यवाणी करना परमेश्वर की बात कहना ही था।[20] प्रेरितों के शब्दों का अति महत्वपूर्ण पहलू यह नहीं था कि वे चमत्कारी ढंग से बहुत सी बोलियां बोल रहे थे, बल्कि यह था कि वे *परमेश्वर के लिए* बोल रहे थे! पतरस ने निर्भीक होकर यह घोषणा की कि वह और अन्य प्रेरित परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से बोल रहे थे!

मसीह और उसके पुनरुत्थान के बारे में अपना महान संदेश देने के लिए पतरस पूरी तरह से तैयार था। मेरी इच्छा हो रही है कि तुरन्त आयत 22 पर चला जाऊं, जहां से उसके प्रवचन का मुख्य भाग आरम्भ होता है, परन्तु मुझे कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं, ''19 से 21 तक की आयतों का क्या अर्थ है?''

> '' 'और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम, और नीचे धरती पर चिह्न अर्थात लोहू, और आग और धुएं का बादल दिखाऊंगा। प्रभु के महान और प्रसिद्ध दिन के आने से पहिले सूर्य अंधेरा और चांद लोहू हो जाएगा और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।' ''

पतरस ने योएल की भविष्यवाणी स्पष्ट करने के लिए इन शब्दों को उद्धृत किया, परन्तु इनकी व्याख्या करने के लिए वह बिल्कुल चिन्तित अथवा व्याकुल नहीं था। इसलिए, पतरस के संदेश को समझने के लिए इन शब्दों का अर्थ जानना अनिवार्य नहीं होना चाहिए। परन्तु, उत्सुक लोगों की ख़ातिर, हम यह मान कर चलेंगे कि 19 से 21 आयतों में अपोकलिप्टिक (भविष्यवाणी) की भाषा है।[21] इस प्रकार की भाषा का अर्थ अक्षरश: नहीं निकालना चाहिए; इसमें *संकेतों* के द्वारा शिक्षा होती है। सूर्य और चांद के लिए जिस पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग योएल ने किया है, उसका उपयोग ''परमेश्वर द्वारा किसी विशेष ढंग से किसी को आशीष या श्राप देने के लिए'' पुराने नियम में ही किया गया (देखिए यशायाह 13:6, 10, 11; यहेजकेल 32:2, 7, 8; आमोस 5:18, 20)। ऐसे शब्दों का उपयोग संसार के अन्त की बात बताने के लिए भी किया जा *सकता* है।[22] (तब, तो निश्चित ही परमेश्वर आशीष या श्राप देने के लिए विशेष ढंग से कार्य करेगा)। अधिकतर, इसमें परमेश्वर की योजना तथा उद्देश्य में जलवायु से सम्बन्धित बात ही होती है।

इन विचारों को मन में रखते हुए, हम हैरान होते हैं, ''आयत 19 से 21 तक के योएल

के शब्द किस घटना की ओर संकेत करते हैं?''[23] बहुत से लोगों का मानना है कि इनमें ''अन्त के दिनों'' *के अन्त* की बात है, जब मसीह वापस आएगा और यह संसार नहीं रहेगा।[24] यह सही हो सकता है, परन्तु मुझे इस व्याख्या से एक दिक्कत है: 19 और 20 के बाद आयत 21 बताती है: ''और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।'' जब मसीह वापस आएगा, तब उसका नाम लेकर उद्धार पाने के लिए बहुत देर हो चुकी होगी। इसलिए, मेरे विचार से, आयत 19 और 20 *पिन्तेकुस्त के दिन* की ओर संकेत करती हैं, जिस अति महत्वपूर्ण दिन परमेश्वर ने कलीसिया को स्थापित करने के लिए ''आकाश और धरती को हिला दिया'' और सुसमाचार के प्रथम संदेश का प्रचार हुआ।[25] (संदेश के अन्त में, पतरस ने उनको समझाया कि उद्धार पाने के लिए ''प्रभु का नाम'' *कैसे* लेना है।[26])

यीशु का व्यक्तित्व (2:22-24)

सुनने वाले जो कुछ जानना *चाहते* थे (जो उन्होंने सुना और देखा उसकी व्याख्या), पतरस ने उन्हें वह सब कुछ बताया जो उनके लिए *आवश्यक* था। यीशु की बात आरम्भ करते समय जो गंभीरता उसके चेहरे पर आई होगी, उसकी कल्पना मैं कर सकता हूं। ''हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी[27] एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिह्नों से प्रकट है,[28] जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो'' (आयत 22)। यीशु के काम ''किसी कोने में नहीं'' हुए (26:26) थे; यह बात कि उसने बहुत बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म किए, आम लोग जानते थे (यूहन्ना 9:16; 12:37)।[29] पतरस भी उसी बात की ओर ध्यान दिलाना चाहता था जो यीशु के पृथ्वी पर रहते समय निकुदेमुस ने कही थी: जो चिह्न यीशु ने दिखाए उन्हें कोई नहीं दिखा सकता था, ''यदि परमेश्वर उसके साथ न हो [ता]'' (यूहन्ना 3:2)!

''तुम्हारे बीच'' कहते हुए पतरस उन लोगों की तरफ इशारा कर रहा होगा जो स्थायी तौर पर फलस्तीन में रहते थे, परन्तु जब उसने यह कहा कि ''जिसे तुम आप ही जानते हो'' तो उसने अपनी बाहें फैला दी होंगी। पिछले पचास दिन से यरूशलेम में यीशु नासरी -उसका जीवन, उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना (लूका 24:18), वह खाली कब्र जहां उसकी देह रखी गई थी,[30] और ये अफवाहें कि उसकी देह का क्या हुआ (मत्ती 28:11-15) सबसे अधिक चर्चा का विषय था। हर कोई जो भी इन दिनों फलस्तीन में था, और वह भी जो वहां नहीं था, यीशु[31] के नाम से परिचित हो चुका होगा और उसके द्वारा किए गए प्रसिद्ध आश्चर्यकर्मों की बात सुन चुका होगा।

पतरस ने फिर कुछ ऐसा बताया जिसका उन्हें पता *नहीं* था; ''उसी को, जब परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने[32] अधर्मियों [अर्थात रोमी सिपाहियों[33]] के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला'' (आयत 23)। पतरस की यह बात (भीड़ के रूप में, उन्होंने यीशु का इन्कार करके उसकी मौत मांगी थी) उन्हें ज्ञात थी, परन्तु पहले भाग का उल्लेख उनके लिए चौंकाने वाला प्रकाश था। यीशु की

मृत्यु ''परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार'' हुई थी![34]

यीशु को मसीह मानने में किसी यहूदी के लिए सबसे बड़ी बाधा यह थी कि वह रोमी क्रूस पर मरा था।[35] मूसा ने कहा था, ''जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह स्रापित हो'' (गलतियों 3:13; देखिए व्यवस्थाविवरण 21:23)। यहूदी सोच के अनुसार, मसीह बड़ी महिमा और शक्ति के साथ आने वाला था। उसका निर्धन बन कर, दास के रूप में रहना और एक अपराधी की मौत मरना उनकी समझ से बाहर था। फिर तो यह आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने कहा कि क्रूस की बात यहूदियों के लिए ''ठोकर का कारण'' है (1 कुरिन्थियों 1:23)।

परन्तु, पतरस ने घोषणा की, कि क्रूस के कारण यीशु का मसीह होने का दावा रद्द नहीं होता, बल्कि उससे उसकी *पुष्टि* होती है – क्योंकि क्रूस तो लम्बे समय से परमेश्वर की योजना का भाग थी! सम्भवत: पतरस ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों में से दुखी दास की बात को उद्धृत किया, जिसका वर्णन यशायाह 53 और भजन संहिता 22 में मिलता है।[36]

पतरस ने ये आश्चर्यजनक बातें बतानी बन्द नहीं की थीं। यीशु के बारे में अगला तथ्य और अधिक चौंकाने वाला था: ''*उसी को परमेश्वर ने* मृत्यु की पीड़ाओं से छुड़ाकर *जिलाया*; क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता'' (आयत 24)। फसह और पिन्तेकुस्त के मध्य के दिनों में उत्सुकतावश यहूदी लोग अरिमतियाह के यूसुफ की कब्र देखने गए होंगे और उस अंधेरे में झांक कर आए होंगे। कई तो यह पूछ रहे होंगे कि ''उसकी लाश का क्या हुआ?''[37] अफवाहें फैल रही होंगी: ''मैंने फलां आदमी से सुना है कि उसने यीशु नासरी को मरने के बाद जीवित देखा है!'' पतरस ने उनके सभी कहे-अनकहे प्रश्नों का उत्तर दे डाला: यीशु जी उठा *था*। यीशु को मृत्यु दण्ड दिया गया था, परन्तु परमेश्वर ने इस आदेश को उलट दिया था! ''परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिला दिया!''

पुनरुत्थान की घोषणा करने के लिए पतरस ने बहुत स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया, जिसकी कमी अधिकतर अनुवादों में पाई जाती है। मूल में, पतरस ने कहा कि परमेश्वर ने यीशु को ''मृत्यु की *पीड़ाओं* से छुड़ाया।'' ''पीड़ाओं'' शब्द का अनुवाद उस शब्द से किया गया है जिसका इस्तेमाल यूनानी लोग जन्म की पीड़ा के लिए मुहावरे के रूप में करते थे। यीशु के कब्र में रहने की तुलना पतरस ने गर्भस्थ शिशु से की। समय पूरा होने पर, शिशु का जन्म होता है, चाहे उसकी मां तैयार हो या न हो।[38] बिल्कुल इसी प्रकार, जब यीशु का कब्र से निकलने का समय आया, तो ''यह अनहोना था कि वह उसके (मृत्यु के) वश में रहता!''

कितने रोमांचित करने वाले शब्द हैं ये, कि ''उसी को परमेश्वर ने ... जिलाया।'' ये शब्द मसीहियत की धड़कन हैं। नये नियम में पुनरुत्थान का उल्लेख सौ से अधिक बार हुआ है! सबसे बढ़कर, पुनरुत्थान के गवाह प्रेरित ही थे (1:22)। उन्होंने निडरता से यह घोषणा की कि यीशु ''मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है'' (रोमियों 1:4)। उसके जी उठने से उनके स्वरों को शक्ति मिली,

उनके हौसले बुलन्द हुए, और उनके पांवों को पंख मिल गए। प्रेरितों ने मृत मुक्तिदाता पर नहीं, बल्कि जीवित उद्धारकर्त्ता पर विश्वास किया, जिसने उनकी सहायता की और उन्हें शक्ति दी (मत्ती 28:20)। वे जी उठे अपने प्रभु के लिए हर रोज़ अपने प्राणों को जोखिम में डालते थे![39]

दाऊद की भविष्यवाणियां (2:25-31)

पतरस के यह कहने पर कि ''परमेश्वर ने उसे जिलाया है,'' हर एक सुनने वाला चकित रह गया होगा, ''क्या यह सत्य हो सकता है?'' सब कुछ इसी प्रश्न पर अटक गया था।

उसके जी उठने को प्रमाणित करने के लिए, पतरस ने उन बातों की ओर उनका ध्यान दिलाया, जो पहले ही कही गई थीं।[40] विशेषकर उसने भजन संहिता 16 से उद्धृत किया:[41] ''क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि 'मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं' '' (पद 25)। ''इस्राएल के मधुर भजन गायक'' दाऊद (2 शमूएल 23:1) का नाम सुनकर जो अभी भी इस्राएली लोगों का चहेता था, यहूदी लोग और ध्यान से सुनने लगे होंगे। वे मानते थे कि मसीह दाऊद के वंश में से ही आएगा और वही उसके सिंहासन का उत्तराधिकारी होगा।

पतरस ने भजन संहिता 16 में दाऊद की बातों से प्रमाण देना जारी रखा:

> इसी कारण मेरा मन आनन्दित हुआ; और मेरी जीभ मगन हुई; वरन मेरा शरीर भी आशा में बसा रहेगा, क्योंकि तू मेरे प्राणों[42] को अधोलोक में न छोड़ेगा;[43] और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा। तूने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा'' (पद 26-28)।

उसके मुख्य शब्द थे कि ''तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।'' भजन संहिता में, दाऊद ने यह बात उत्तम पुरुष के लिए की; इसलिए ऐसा लगता है जैसे उसने अपने लिए ही कहा हो। तथापि, यहूदियों को मालूम था कि दाऊद अक्सर मसीह को उत्तम पुरुष ही लिखता था। प्रश्न यह था कि क्या भजन संहिता 16 में दाऊद ने अपने लिए कहा या फिर मसीह के विषय में।

पतरस यह बहस भी कर सकता था कि दाऊद अपने लिए ''पवित्र जन'' शब्द का इस्तेमाल नहीं कर सकता था, विशेषकर बतशेबा के साथ अपने पाप के बाद। परन्तु, पतरस ने उसका दूसरा पहलू लिया: ''हे भाइयो, मैं उस कुलपति[44] दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूं कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है'' (पद 29)। दाऊद की कब्र को सारे यरूशलेम के लोग पहचानते थे; नगर के भीतर केवल यही एक कब्र थी[45] और इधर से हर रोज़ कई लोग गुज़रते थे। यह स्पष्ट था कि दाऊद ज़िन्दा नहीं हुआ था। इसलिए, भजन संहिता 16 में वह

अपने लिए नहीं कह सकता था। यदि उसका यह हवाला अपने लिए नहीं था, तो अवश्य ही यह मसीह के लिए होगा। पतरस ने कहा:

> सो भविष्यवक्ता होकर[46] और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझसे शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा। ([दाऊद के साथ की गई उस महान वाचा का हवाला 2 शमूएल 7:8-17 में मिलता है[47]]), उसने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने की भविष्यवाणी की[48] कि न तो उसका [मसीह का] प्राण अधोलोक में छोड़ा गया और न उसकी देह सड़ने पाई (आयतें 30, 31)।[49]

इस प्रकार पतरस ने प्रमाणित किया कि दाऊद ने मसीह के बारे में ही भविष्यवाणी की थी कि वह कब्र में नहीं रहेगा। इस सच्चाई ने उन्हें मृतकों में से जी उठने की बात मानने को विवश कर दिया!

पतरस लोगों को यह समझाने के लिए तैयारी कर रहा था कि दाऊद की भविष्यवाणी वास्तव में यीशु के लिए थी। इसे ध्यान में रखते हुए विचार करें कि यीशु की देह के तीन दिन तक कब्र में रहने के सम्बन्ध में 27 और 31 आयतें क्या कहती हैं:[50] ''क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा''; ''न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई।'' जब यीशु क्रूस पर था तो उसने पश्चात्ताप करने वाले डाकू से कहा था, ''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:43)। हमें लग सकता है कि ''स्वर्गलोक'' का अर्थ स्वर्ग है, परन्तु जी उठने के बाद यीशु ने कहा था ''मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया'' (यूहन्ना 20:17)। प्रेरितों 2:27, 31 से हमें पता चलता है कि यीशु और पश्चात्ताप करने वाला डाकू जब ''स्वर्गलोक'' में गए तो वे कहां थे: यीशु की देह कब्र में थी, परन्तु उसके प्राण *अधोलोक* में गए थे। ''अधोलोक'' का अक्षरश: अर्थ ''अदृश्य'' है; इसे ''अदृश्य संसार'' के लिए इस्तेमाल किया गया है, जहां देह से अलग होकर आत्माएं न्याय की प्रतीक्षा करती हैं। इसलिए ''स्वर्गलोक'' ''अधोलोक'' का वह भाग है जहां धर्मी लोग न्याय से पूर्व आराम से रहते हैं (जहां मरने के बाद भिखारी लाज़र भी गया [तु. लूका 16:22])। मृत्यु पश्चात यीशु के प्राण और उस पश्चात्तापी डाकू के प्राण *यहीं* गए थे।

जब मैं और आप मरेंगे, तो हमारे शरीर कब्र में जाएंगे और आत्माएं अधोलोक में; अन्तिम तुरही के फूंके जाने तक कब्र और अधोलोक हमें अपनी पकड़ में रखेंगे (1 कुरिन्थियों 15:52-57)। तथापि, दाऊद ने आत्मा की प्रेरणा से घोषणा की कि जो दूसरे सब लोगों के लिए सत्य है,[51] वह मसीह के लिए सत्य *नहीं* होना था। अधोलोक और कब्र उसे काबू में नहीं रख सके, परमेश्वर ने उसके प्राण को अधोलोक में नहीं रहने देना था और न ही उसकी देह को कब्र में!

इससे पहले कि हम पतरस के उस प्रमाण की ओर ध्यान दें कि यीशु मृतकों में से जी उठा था, इस पर विचार करें: जब हमारे कानों में ''मसीह'' शब्द सुनाई देता है, तो

हमारा ध्यान स्वत: ही यीशु की ओर चला जाता है। पतरस से आगे मत निकलें। अभी तक, उसने *दावा* किया था कि उसके सुनने वाले जिस यीशु को जानते थे, परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिला दिया था (पद 22, 24) और उसने *प्रमाणित* कर दिया था कि जिस मसीह की वे बाट जोह रहे थे, उसी को मृतकों में से जिलाने का परमेश्वर ने वायदा किया था (पद 31)। फिर उसने यह प्रमाणित करना था कि जिस यीशु को वे जानते थे और जिस मसीह की वे बाट जोह रहे थे, वे दोनों एक ही थे। वह यह प्रमाणित करते हुए आगे बढ़ा कि मसीह दाऊद की कही बातों के अनुसार जी उठा है।

प्रेरितों की घोषणा (2:32)

पतरस का पहला प्रमाण उसकी अपनी और अन्य प्रेरितों की गवाही थी: ''इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं'' (पद 32)। ''हम सब'' कहकर उसने हाथ से शेष ग्यारह प्रेरितों की ओर इशारा किया होगा। पुराने नियम में कहा गया था कि ''दो या तीन साक्षियों के कहने की बात पक्की ठहरे'' (व्यवस्थाविवरण 19:15)। पतरस के श्रोताओं के सामने दो या तीन की गवाही नहीं थी, बल्कि वहां पर निर्दोष चरित्र के बारह लोग थे जिनको इससे कोई व्यक्तिगत लाभ मिलता (सांसारिक दृष्टिकोण से) नज़र नहीं आ रहा था - बल्कि मसीह का प्रचार करके उनका सब कुछ छिन सकता था।[52]

पतरस ने और विस्तार से, अपने संदेह के बारे में बताया होगा कि उसे कितनी मुश्किल से विश्वास दिलाया गया था कि मसीह सचमुच कब्र में से जी उठा है। अन्य प्रेरितों ने भी अपनी-अपनी गवाही दी होगी। मैं थोमा को बहुत से लोगों के चेहरों पर संदेह की स्पष्ट झलक देखते और यह कहते हुए कल्पना कर सकता हूं, ''मैं जानता हूं कि आपके मन में इस समय क्या-क्या आ रहा है। मैं वहीं था! मैं भी विश्वास नहीं करना चाहता था। परन्तु फिर, मेरे सामने खड़ा होकर कील के छेद और सूखे लहू वाले हाथ लिए, वह अपनी पसली में ज़ख्मी मांस और नंगी हुई हड्डियां मुझे दिखाने के लिए कपड़ा उठाने लगा। मैं उसके आगे गिर कर चिल्ला-चिल्ला कर यह कहने के सिवाय और कुछ नहीं कर सका था कि 'हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!' '' (यूहन्ना 20:24-28)।

आत्मा की उपस्थिति (2:33)

पतरस का दूसरा प्रमाण वे आश्चर्यकर्म थे जिनकी वह भीड़ गवाह थी: ''इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो'' (पद 33)।

उन्होंने आंधी का स्वर सुना था, आग की सी जीभें देखी थीं और वे प्रेरितों द्वारा सभी ज्ञात भाषाएं बोलने के आश्चर्यकर्म के गवाह थे। (क्योंकि पतरस ने कहा, ''जो तुम देखते और सुनते हो,'' आग की लपटें अभी भी प्रेरितों के सिरों पर टिमटिमा रही होंगी। रहस्यमयी

डरावनी आंधी की तरह गरजी आवाज़ अभी भी आंगन में दूर-दूर तक सुनाई दे रही होगी)। इसलिए, सबको यह स्पष्ट हो जाना चाहिए था कि परमेश्वर का आत्मा वहां था। पतरस यह कहकर परमेश्वर के लिए ही बोल रहा था कि यीशु मृतकों में से जी उठा है।

धर्मशास्त्र का प्रमाण (2:34-36)

पतरस एक नई बात लेकर आया था: यीशु का परमेश्वर के दाहिनी ओर ऊंचा किया जाना। एक बार जी उठने की बात प्रमाणित करने के बाद, अगला प्रश्न यह होना था कि ''यदि यीशु जी उठा है तो, वह कहां है?'' पतरस का उत्तर था कि यीशु स्वर्ग में था; उसे परमेश्वर के पास उठा लिया गया था।

क्योंकि यह बात यहूदियों के लिए नई और भड़काने वाली थी, इसलिए पतरस ने यह दिखाने के लिए कि भविष्यवाणी तो पहले ही की गई थी फिर से दाऊद की भविष्यवाणी का हवाला (भजन संहिता 110:1) दिया।[53] उसने कहा, ''क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; 'मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं' '' (पद 34,35)। यदि आपके पास KJV वाली (अंग्रेज़ी की) बाइबल है, तो ध्यान से देखें कि पहले वाले (''Lord'') के लिए सभी अक्षर (''LORD'') बड़े हैं जबकि दूसरे (''Lord'') के पिछले तीन अक्षर छोटे हैं। यह इस बात की ओर संकेत है कि पहला प्रभु ''यहोवा'' (परमेश्वर का पवित्र नाम) है जबकि दूसरा साधारण तौर पर ''प्रभु'' के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है।[54] अन्य शब्दों में दाऊद ने कहा कि प्रभु (अर्थात परमेश्वर) ने मेरे प्रभु से कहा, ''मेरे दाहिने बैठ'' (परमेश्वर के दाहिने बैठने का अर्थ उस अधिकार के स्थान पर उसके साथ शासन करने के लिए बैठना है [मत्ती 28:18]।)

पतरस का तर्क वही पहले वाला था कि दाऊद अभी तक कब्र में था और उसने अपने ऊपर उठाए जाने की बात नहीं की थी; इसलिए दूसरा ''प्रभु'' अवश्य ही मसीह को कहा गया था। *दाऊद मसीह के* ही ऊपर उठाए जाने और महिमा पाने की बात कर रहा था।

पतरस मसीह के परमेश्वर के दाहिने बैठने की बात करके 30 और 31 आयतों में की बात की ओर मुड़ रहा था: ''भविष्यवक्ता होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ [दाऊद] से शपथ खाई है, कि मैं *तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बिठाऊंगा।* उसने होनहार को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने की भविष्यवाणी की ...।'' 30 और 31 आयतें बताती हैं कि जी उठना अपने आप में कोई मंज़िल नहीं है, बल्कि यह मसीह का *दाऊद के सिंहासन पर* बैठने का आरम्भ है। इस विचार को 33 और 34 आयतों से मिलाएं। 33 आयत में पतरस ने घोषणा की कि मसीह के बारे में की गई भविष्यवाणी को यीशु ने पूरा कर दिया, क्योंकि उसे *परमेश्वर के दाहिने* बिठा दिया गया था। हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि *दाऊद के सिंहासन* पर बैठना परमेश्वर के दाहिने हाथ (अर्थात परमेश्वर के सिंहासन पर) बैठने जैसा ही था (और है)। ध्यान दें कि यीशु का राज्याभिषेक *स्वर्ग में* हुआ, पृथ्वी पर नहीं। प्रकाशितवाक्य 3:21 में यीशु ने लौदीकिया

की कलीसिया को बताया, '' ... मैं ... जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।'' यीशु के सिंहासन को दाऊद का सिंहासन भी और परमेश्वर का सिंहासन भी क्यों कहा गया? इस सिंहासन को दाऊद का सिंहासन इसलिए माना जाता था क्योंकि यह दाऊद के वंश को मिलना था जिस कारण यीशु को इसका राजा बनने का अधिकार मिला। वास्तव में, यह सिंहासन *परमेश्वर का* है क्योंकि वह सारे अधिकार का स्रोत है।[55]

इसलिए, मसीह *अब* राज्य कर रहा है[56] और आयत 35 के अनुसार, वह तब तक राज्य करता रहेगा जब तक परमेश्वर उसके शत्रुओं को ''उसके पांवों तले की चौकी'' न कर दे। यह हमें 1 कुरिन्थियों 15:25, 26 का स्मरण कराता है, ''क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक उसका [यीशु का] राज्य करना अवश्य है। सबसे अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा, वह मृत्यु है।''

चलो अपने पाठ की 33 से 35 आयतों को संक्षिप्त करते हैं: पतरस ने घोषणा की कि जी उठा यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया, जहां उसे राजा होने का मुकुट पहनाया गया था! फिर जैसा कि उन्होंने देखा, यीशु के राज्याभिषेक की घोषणा करने के लिए पवित्र आत्मा उतरा। (प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्ययन के लिए बहुत पहले मेरी एक क्लास में, जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने इस अवसर की तुलना वैस्टमिन्सटर ऐबे में बर्तानवी शासक के राज्याभिषेक के साथ की थी जिसमें बाहर प्रतीक्षा कर रही भीड़ को बताने के लिए एक संदेशवाहक भागकर घोषणा करता है, ''हमें नया राजा मिल गया! हे राजा, युग युग जीओ!'')

पतरस निष्कर्ष निकालने को तैयार था। उसने ध्यान दिलाया था कि *मसीह* के सम्बन्ध में पुराना नियम क्या कहता था। उसने प्रमाणित कर दिया था कि *यीशु* ने प्रत्येक भविष्यवाणी को पूरा कर दिया है। अब वह दोनों बातों को मिलाने के लिए तैयार था। मैं कल्पना कर सकता हूं कि प्रभावशाली ढंग से बताने के लिए वह रुकता है, और फिर गरज कर बोलता है: ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी[57]'' (आयत 36)!

यीशु के साथ यहूदियों के व्यवहार की तुलना उसके साथ परमेश्वर के द्वारा किए गए व्यवहार से की गई: यहूदियों ने तो यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, किन्तु परमेश्वर ने उसे प्रभु भी और मसीह भी बना दिया! परमेश्वर ने सारी मनुष्यजाति पर प्रकट कर दिया कि यीशु ही ''ख्रिस्तुस'' अर्थात मसीह था, जिसकी वे सदियों से राह देख रहे थे। उसके जी उठने से, परमेश्वर ने यह भी पुष्टि कर दी कि यीशु ही उनका ''प्रभु'' - उनका शासक, उनके भविष्य का मालिक है, उसके प्रति वे निष्ठावान हों!

कितना अद्भुत प्रवचन था; और उसका निष्कर्ष कितना नाटकीय!

सारांश

एक बार फिर प्रेरितों 2 के अपने शेष अध्ययन को आगे बढ़ाने से पहले हम यहीं बन्द करते हैं। इस पूरे अध्याय का विषय ही ''आरम्भ'' है। 37 से 41 आयतों में, सुसमाचार की आज्ञा मानने के आरम्भ के बारे में पता चलता है। लोग पुकार उठे, ''हम क्या करें?'' (पद 37); पतरस ने उत्तर दिया, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (पद 38); और ''जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (पद 41)। फिर, 42 से 47 आयतें कलीसिया के जीवन के आरम्भ के बारे में बताती हैं, क्योंकि बपतिस्मा लेने वालों को पता चल गया था कि मसीह में नया जीवन जीने का क्या अर्थ है। यही जोश अध्याय के अन्त में भी रहता है।

परन्तु, इस अध्याय का सार, यीशु मसीह के बारे में दिया गया पतरस का प्रवचन ही है। किसी ने कहा है कि प्रचार करना तो किसी की ओर गेंद उछालने के जैसा है।[58] जब भी कोई प्रचारक किसी विशेष विषय पर बात करता है, तो वह वैसे ही कठिन होता है जैसे उसने अपने सुनने वालों की ओर यह देखने के लिए, एक गेंद फेंकी हो कि वे इसका क्या करते हैं। कई तो गेंद को लेकर सिर पर उछालेंगे, शायद यह भूलकर कि किसी ने उसे उनकी ओर फेंका था। कई उसे पकड़कर, केवल अपने पास रख लेंगे। कई इसे पकड़कर फिर प्रचारक की ओर फेंक देंगे। प्रचार करना भी तो ऐसा ही है।

यीशु के बारे में यह अध्ययन हम अपने आप को ज्ञानी ठहराने के लिए नहीं कर रहे हैं। मैं आपकी तरफ ''गेंदें फेंके जा रहा'' हूं - बातें जो मैं कर रहा हूं, गेंदें ही तो हैं। आपने उनका क्या *किया*? क्या वे आप के सिर के ऊपर घूम रही हैं? क्या आपने उनको ''पकड़कर'' (समझकर)उनका कुछ उपयोग किया है: अथवा, क्या आप ''वापस फेंक कर'' उन तीन हज़ार लोगों की तरह ही उन्हें ग्रहण करने को तैयार हैं, जिनमें पहली बार भरपूरी के साथ सुसमाचार का प्रचार किया गया था?

प्रेरितों 2:41 में बताया गया है ''सो जिन्होंने [*प्रसन्नता से*] उसका [पतरस का] वचन ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया; और *उसी दिन* तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।'' यदि *आपने* यीशु के संदेश को प्रसन्नता से ग्रहण कर लिया है तो आप उसके नाम में बपतिस्मा लेने से हिचकिचाएंगे नहीं। उन तीन हज़ार लोगों ने उसी दिन बपतिस्मा लिया था। यदि आप को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, तो *आज* ही ले लें।

विज़ुअल-एड नोट्स

1. प्रेरितों के काम की पुस्तक में से सिखाते समय, आप को मनपरिवर्तन के उदाहरणों पर बल देना चाहिए। ऐसा करने के लिए आप एक चार्ट की सहायता ले सकते हैं जिसमें मुख्य उदाहरणों की कुछ विशेष बातें बताई गई हों।

जब मैं प्रेरितों के काम की पुस्तक में से पढ़ाता हूं तो मैं इस पाठ के अन्त में बने

चाट की एक खाली प्रति सबको बांट देता हूं और उनसे कहता हूं कि जैसे-जैसे हम अध्ययन करें वे इसे भरते रहें। खाली खानों में सही के निशान लगाने के बजाय मैं उनसे कहता हूं कि वे सम्बन्धित हवाले में से पढ़कर शास्त्र की बातों को हर एक घटना के अनुसार लिख लें। मनपरिवर्तन की इन घटनाओं का जब भी अध्ययन करें, हम समय निकाल कर इस चार्ट को भरते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं तो अध्ययन के अन्त में आपका चार्ट पाठ के अन्त में दिए चार्ट की तरह ही दिखाई देगा।

चार्ट भरने के बाद, हम कुछ देर के लिए उसे बड़े ध्यान से देखते हैं। दो बातों की ओर ध्यान दिया जा सकता है: (1) हर एक घटना में बपतिस्मे का उल्लेख अवश्य हुआ है। (2) उद्धार *वर्तमान में मिलता* है इसलिए इसका उल्लेख बपतिस्मे से पहले कभी नहीं हुआ।

2. क्लास के माहौल में, यह बताने के लिए कि पतरस के संदेश को लोगों ने कैसे स्वीकार या अस्वीकार किया, मैं वास्तव में एक गेंद का उपयोग करता हूं। यह दिखाने के लिए कि आज अलग-अलग लोग उसे किस प्रकार ग्रहण करते हैं मैं क्लास की ओर गेंद उछालता हूं। (स्पंज का, एक नर्म बॉल हो जिससे किसी को चोट लगने का भय न हो)।

3. प्रेरितों के काम 2 अध्याय में लोगों के साथ पतरस के प्रवचन का अध्ययन करते समय, ज़ोर देकर बताएं कि जब तक आयत 36 में पतरस ने नहीं बताया, पतरस के श्रोताओं के मन में ''मसीह'' और ''यीशु'' के दो भिन्न अर्थ थे। यदि आपके पास बोर्ड या लिखने के लिए कोई और चीज़ हो, तो आप उस पर एक आकृति बनाकर समझा सकते हैं।

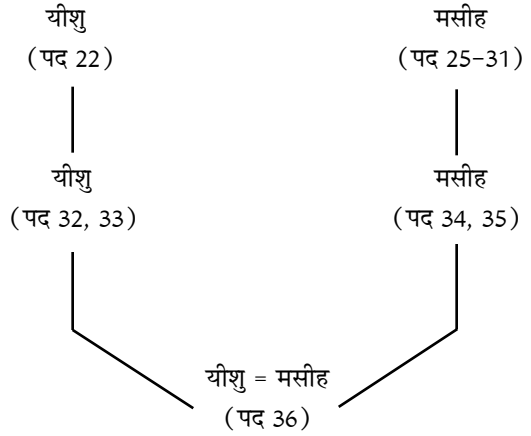

आयत 22 पर पहुंचकर बाईं ओर ''यीशु'' लिखें। फिर जब आप 25 से 31 आयतों पर विचार कर रहे हों तो दाहिनी ओर शब्द ''मसीह'' लिख सकते हैं। 32 और 33 आयतें वापस ''यीशु'' की ओर ले जाती हैं, जबकि 34 और 35 आयतें फिर से ''मसीह'' की ही बात करती हैं। जब आप 36 आयत पर आ जाएं तो इन दोनों ही विचारों को मिला

दें। यही तो पतरस के संदेश का सार है: यीशु ही मसीह *है*! यदि आपके पास लिखने के लिए बोर्ड नहीं है (या आप बोर्ड पर लिखना नहीं चाहते) तो आप अपने *एक हाथ* को ''यीशु'' और दूसरे को ''मसीह'' मानकर समझा सकते हैं। ऐसे दिखाते हुए जैसे पतरस एक के या दूसरे के बारे में बता रहा हो, दोनों हाथों को एक दूसरे में फंसा कर, ज़ोर से *कस* दें: ''यीशु'' और ''मसीह'' एक ही है!

प्रवचन नोट्स

1. प्रेरितों के काम की पुस्तक में से मनपरिवर्तन के उदाहरणों से संदेश का एक शृंखला में प्रचार किया जा सकता है। मैं इस पाठ को कपड़े के बोर्ड पर दिखाए गए रेखाचित्र की तरह क्रम में रख कर सिखाता हूं। दृश्य को सेट करने के लिए बायें सिरे में मुख्य शब्दों को लिखता हूं। बोर्ड के मध्य में पतरस को भीड़ में प्रचार करते दिखाया गया है। पाठ की मुख्य बातें बोर्ड पर सब से नीचे दी गई हैं। पतरस के प्रवचन की सरल सी रूपरेखा दाहिने सिरे पर लिखी है। इसे चार्ट और, बोर्ड पर लिखकर, या हाथों से समझाकर भी दिखाया जा सकता है।

2. आप यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक से मनपरिवर्तन के उदाहरणों से तीन महीने की क्लासों या पाठों के रूप में सिखाना चाहते हों, तो नीचे दिए सुझावों को ध्यान में रखें:

1. मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; और लूका 24:45-49 में-महान आज्ञा। इससे आपको मनपरिवर्तन के उदाहरण बताने के लिए पृष्ठभूमि मिल जाएगी।
2. पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 2)।
3. सामरियों का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 8)।
4. शमौन टोना करने वाला (''एक जादूगर का मनपरिवर्तन''; प्रेरितों 8)।
5. हब्शी खोजे का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 8)।
6. शाऊल का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 9; 22; 26)।
7. कुरनेलियुस का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 10; 11)।
8. लुदिया का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 16)।
9. दारोगे का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 16)।
10. कुरिन्थियों का मनपरिवर्तन (प्रेरितों 18)।
11. अपुल्लोस नामक ''एक प्रचारक का मनपरिवर्तन'' (प्रेरितों 18)।
12. फेलिक्स का अपरिवर्तित रहना (प्रेरितों 24)।
13. अग्रिप्पा का अपरिवर्तित रहना (प्रेरितों 25; 26)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन करते हुए मैं इन अधिकतर पाठों को समझने के लिए संक्षिप्त रूपरेखा और चित्र बनाकर समझाने के लिए विज़ुअल-एड दूंगा। आपके

प्रेरितों 2 : 3,000 का उद्धार कैसे हुआ

पिन्तेकुस्त

12 प्रेरित

मन्दिर

यीशु ही मसीह है!

- आश्चर्यकर्म
- भविष्यवाणी
- पुनरुत्थान
- आत्मा का बहाया जाना

1. मसीह के बारे में सुनकर
2. मसीह में विश्वास करके
3. मसीह की आज्ञा मानकर: ''मन फिराओ, और ... बपतिस्मा ले।''
4. *तुरन्त* मसीह की आज्ञा मानकर
5. मसीह की कलीसिया में मिलाए जाकर
6. मसीह में बने रहकर

पतरस के प्रवचन को दर्शाता फलालेन (कपड़े) का बोर्ड

लिए आवश्यक अधिकतर सहायता सामग्री पाठ की टिप्पणियों में दी जाएगी।

3. यह प्रचार करने के लिए कि ''97,000 का उद्धार क्यों नहीं हुआ!'' प्रेरितों 2 की रूपरेखा के अनुसार मनपरिवर्तन का विषय एक दिलचस्प पहलू है। यहूदियों के तीन बड़े पर्वों के समय, यरूशलेम और उसके आसपास के इलाकों की जनसंख्या लाखों तक पहुंच जाती थी (कइयों ने इसके दस लाख तक होने का अनुमान लगाया है)। उलझन में पड़ने से बचने के लिए हम इसे एक लाख की भीड़ मान कर चलते हैं। क्योंकि तीन हज़ार ने बपतिस्मा लिया, इसका अर्थ यह हुआ कि कम से कम 97,000 लोगों ने बपतिस्मा नहीं लिया! उन्होंने क्यों नहीं लिया? उन सभी 3,000 लोगों पर विचार करें जिन्होंने वचन को मान लिया; और फिर उनकी ओर मुड़ें जिन्होंने नहीं माना। 97,000 पर पतरस के प्रचार का कुछ असर *नहीं* हुआ। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि यीशु ही मसीह है। उनको यह जानने में कोई दिलचस्पी *नहीं* थी कि उन्हें क्या करना चाहिए। उन्होंने पतरस के संदेश को प्रसन्नता से ग्रहण *नहीं* किया। उन्होंने पश्चात्ताप *नहीं* किया। वे टेढ़ी पीढ़ी से अलग *नहीं* होना चाहते थे। इसलिए उन्होंने बपतिस्मा *नहीं* लिया। इसलिए उनका उद्धार *नहीं* हुआ। और परमेश्वर ने उनको कलीसिया में *नहीं* मिलाया। आज जब लोग सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते तो आप इस प्रकार के संदेश में उसके कई कारणों को रेखांकित कर सकते हैं।

पादटिप्पणियां

[1]शब्दावली में देखें ''सुसमाचार''। [2]''उन ग्यारह'' शेष प्रेरितों को कहा गया है, जैसे 1:26 में भी (जब सभी प्रेरितों के लिए कहना हो तो उनके लिए ''उन बारहों'' [6:2] जैसे शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है)। क्योंकि प्रवचन के अन्त में भीड़ ने सभी प्रेरितों से कहा (2:37), इसलिए यह सम्भव है कि पतरस ने वह संदेश एक भाषा में दिया हो जबकि ग्यारह ने वहां जमा हुए लोगों की भाषा में उसका अनुवाद किया हो। यह भी हो सकता है कि केवल पतरस ने ही, सभी के समझ आने वाली प्रचलित भाषा में बात की अर्थात सम्भवत: कोयनि यूनानी भाषा में बात की, जबकि अन्य प्रेरितों ने गवाही के लिए उसके इर्द-गिर्द जमा होकर उसकी सहायता की (मैं देख सकता हूं कि पतरस की बातों पर वे सिर हिलाकर सहमति जता रहे हैं)। आयत 40 (''*उसने* बहुत और बातों से भी समझाया'') और आयत 41 (''सो जिन्होंने *उसका* वचन ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया'') पर भी ध्यान दें। [3]जो लोग ''यरूशलेम में'' रह रहे थे, वे वहां अस्थायी तौर पर रहने के लिए ''आकाश के नीचे'' के हर एक देश से आए थे (आयत 5)। [4]यहूदी लोग पौ फटने अर्थात प्रात: लगभग 6 बजे से ही, दिन का आरम्भ मानते थे। क्योंकि प्रात:काल के समय में भिन्नता हो सकती है, इसलिए समय सुबह 9 बजे के लगभग था। [5]पिन्तेकुस्त जैसे पर्वों पर अधिकांश लोग सुबह 10 बजे से पहले तक, और कई दोपहर से पहले तक कुछ खाते-पीते नहीं थे। [6]पतरस ने सप्तति अनुवाद, अर्थात पुराने नियम के यूनानी अनुवाद से उद्धृत किया (शब्दावली में देखिए ''सप्तति अनुवाद'')। कई टीकाकार पतरस के शब्दों और सप्तति अनुवाद के शब्दों में अन्तर की ओर ध्यान दिलाना पसंद करते हैं। अधिकांश दो तथ्यों की बिल्कुल उपेक्षा कर देते हैं: (1) हम 100 प्रतिशत निश्चित नहीं हो सकते कि मूल पाठ सप्तति अनुवाद से ही लिया गया है। पतरस के शब्द उस सप्तति अनुवाद से मिलते-जुलते होंगे जो आज हमारे पास है। (2) पतरस को परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा थी। जहां उसके शब्द सप्तति अनुवाद से भिन्न हैं, वहां पवित्र आत्मा अपनी प्रेरणा से उसको बता देता है कि उन शब्दों का क्या *अर्थ* है। [7]हमारी बाइबलों में, योएल 2:28 में ''अन्त के दिनों में'' नहीं, बल्कि ''उन बातों के बाद'' है। स्पष्ट है कि ''के

बाद'' शब्दों में समय की जो पहचान बताई गई है, वह ''अन्त के दिनों'' की ओर उसी बात का संकेत देती है जो यशायाह और मीका ने कही थी (यशायाह 2:2; मीका 4:1)। आत्मा की प्रेरणा से पतरस ने हमें बताया कि योएल ''अन्त के दिनों'' की ही बात कर रहा था। [8]यह सम्भव है कि पतरस यहूदी-काल के ''अन्त के दिनों'' के बारे में बात कर रहा हो। क्योंकि, व्याख्या के लिए मूल सिद्धांत यह पूछना है कि मसीह के शासन को महत्व देने के लिए शब्द ''अन्त के दिन'' का सुनने वालों के लिए क्या अर्थ था। [9]1 कुरिन्थियों 10:11; इब्रानियों 9:26; 1 पतरस 1:20; 1 यूहन्ना 2:18 भी देखिए। [10]बहुत से प्रिमिलेनियलिस्ट ''अन्त के दिनों'' को यीशु के हज़ार वर्ष का वह काल्पनिक शासन बताते हैं जिसमें उनके अनुसार वह यरूशलेम से राज्य करेगा।

[11]प्रिमिलेनियलिस्ट टीकाकार योएल की बात के ज़ोर से बचने के लिए संघर्ष करते हैं, परन्तु पतरस ने स्पष्ट कहा, ''*यह वह बात है,* जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है ... कि अन्त के दिनों में ... ।'' उसने यह नहीं कहा कि ''मुझे ऐसा लगता है ... '' या यह कि ''यह वैसा ही है ... '', बल्कि यह कहा कि ''यह वही बात है ... ।'' [12]कुछ लोगों ने, जो यह प्रमाणित करने पर उतारू हैं कि बपतिस्मे के लिए डुबोए जाने की आवश्यकता नहीं है, यहां आयत 33 में दिए शब्द ''उंडेल'' को यह कहने के लिए कब्ज़े में कर लिया है कि ''इससे, यह प्रमाणित होता है कि बपतिस्मा उंडेल कर हो सकता है।'' निस्संदेह, प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के उतरने के सम्बन्ध में प्रयुक्त हुए शब्दों ''बपतिस्मा'' (1:5), ''से भरना'' (2:4), ''उंडेलना'' (2:17) का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप में किया गया। क्योंकि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, उसे मूलत: ''उंडेला'' नहीं जा सकता। यदि इस बात पर कोई मुझे चुनौती दे, तो संभवत: मैं एक गिलास में छोटा पत्थर रख दूंगा। प्रेरितों 1 और 2 की कल्पना करते हुए मैं गिलास में तब तक पानी उंडेलता जाऊंगा जब तक गिलास भरता नहीं और वह पत्थर डूब नहीं जाता। [13]इसके बाद, प्रेरितों के काम में, कइयों ने - जैसे पतरस और पौलुस ने दर्शन देखे (10:17;16:9) शब्द ''स्वप्न'' का विशेष रूप से उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु कई दर्शन रात के समय मिले (22:11; 27:23)। शायद रात के ये दर्शन आत्मा की प्रेरणा से आए स्वप्न ही थे। [14]क्योंकि योएल 2:29 में ''अपने'' के बजाय केवल ''दासों'' है, सम्भवत: ''दासों'' का संकेत वास्तविक दासता से है। अन्य शब्दों में, इसका मसीही बनने वालों की शारीरिक दासता हो सकता है। [15]योएल की कही सभी बातें पिन्तेकुस्त के दिन पूरी नहीं हुईं। उदाहरण के लिए जहां तक हमें मालूम है, उस दिन किसी ने दर्शन या स्वप्न नहीं देखा (पद 17)। तब तो, स्पष्ट है, कि पतरस यह कह रहा था कि जो कुछ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ, वह सब योएल की भविष्यवाणी के पूरा होने का आरम्भ था। [16]दान ''बेटे'' और ''बेटियों'' (पद 17), ''दासों और दासियों'' (पद 18) के लिए थे। बाद में स्त्रियों को आश्चर्यकर्म करने के दान मिले (प्रेरितों 21:9)। [17]दानों का वायदा ''जवानों'' और ''पुरनियों'' के लिए था (पद 17)। [18]दास इसमें शामिल होने थे (पद 18)। [19]मूल शास्त्र में ''सब शरीरों'' है (देखिए KJV), जिसमें जानवर, मछलियां, और पक्षी भी हो सकते हैं (1 कुरिन्थियों 15:39)! [20]शब्दावली में देखें ''भविष्यवक्ता।''

[21]पुराने नियम में कई जगह भविष्य सूचक (अपोकलिप्टिक) भाषा के भाग मिलते हैं। उदाहरण के लिए, दानिय्येल 7-12 देखिए। बाइबल में इस प्रकार की भाषा का प्रसिद्ध उदाहरण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक है। मूल शास्त्र में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इन शब्दों के साथ आरम्भ होती है ''यीशु मसीह का *अपोकलुपसिस* (अर्थात प्रकटीकरण)।'' [22]''क्रोध ... के उस दिन'' की बात करने के लिए प्रकाशितवाक्य 6:12-14 में भी ऐसी ही भाषा का प्रयोग किया गया है। मेरे विचार से यह संसार के अन्त की बात है। कइयों का विचार है कि यह शायद रोमी साम्राज्य के न्याय को कहा गया है। ऐसी ही भाषा का प्रयोग 2 पतरस 3:10 में किया गया है, जो निश्चित तौर पर संसार के अन्त की बात है। [23]इस पाठ में दो स्थितियां बताने के अलावा, एक सम्भावना यह भी है कि योएल ने 70 ई. में यरूशलेम के विनाश की ओर इशारा किया। उस दिन, यरूशलेम में रह रहे जितनों ने ''यीशु का नाम लिया'' था (अर्थात मसीही बन गए थे) वे उस विनाश से बच गए। मत्ती 24:15, 16 में मसीह की भविष्यवाणी से चेतावनी पाकर मसीही लोग, यरूशलेम में रोमियों के पहुंचने से पहले, वहां से भाग गए थे। इस स्थिति से शास्त्र की कुछ हानि नहीं है, परन्तु मैं पाठ की बात को पहल देता हूं। [24]हम पहले भी ध्यान दे चुके हैं कि योएल की भविष्यवाणी एक ही दिन

में पूरी नहीं हो गई। 19 से 21 आयतों में संसार के अन्त की बात योएल की भविष्यवाणी के पिन्तेकुस्त के दिन से संसार के-अन्त तक के सम्पूर्ण मसीही युग का संक्षिप्त विवरण है। [25]बहुत से टीकाकारों का मानना है कि आयत 19 और 20 तक का दृश्य कुछ सीमा तक उस समय पूरा हो गया जब यीशु क्रूस पर था और सूर्य अंधेरा हो गया था। यीशु की मृत्यु के समय का भौतिक दृश्य योएल की भविष्यवाणी का आंशिक रूप में पूरा होना है। [26]''प्रभु का नाम पुकारना'' मुंह से बोलने से कहीं बढ़कर है (मत्ती 7:21)। इसे समझने के लिए प्रेरितों 22:16 का हवाला बहुत उपयोगी होगा, जहां हनन्याह ने शाऊल से कहा, ''उठ, बपतिस्मा ले, और *उसका नाम लेकर* अपने पापों को धो डाल।'' [27]''नासरी'' से भाव था कि यीशु नासरत नगर का रहने वाला था। उन दिनों ''यीशु'' नाम सामान्य था। पतरस ने उसको अलग पहचान देने के लिए ''नासरी'' शब्द का उपयोग किया ताकि पता चल सके कि वह *किस* यीशु की बात कर रहा था। [28]नये नियम में आश्चर्यकर्मों को ''सामर्थ के काम,'' ''आश्चर्य के काम'' और ''चिह्न'' कहा गया है। शब्द ''आश्चर्य के कामों'' को यूनानी से लिया गया है जिसका मूल अर्थ ''सामर्थ'' है। ''आश्चर्य के काम'' शब्द उस ''काम'' की ओर संकेत करता है, जो किया गया था। ''आश्चर्य'' शब्द से आशय लोगों पर पड़े *प्रभाव* से है। ''चिह्न'' से भाव इन आश्चर्यकर्मों के *उद्देश्य* को समझाने के लिए है। वे सभी चिह्न यह बताने के लिए थे कि जिनके द्वारा वे होते थे, उनमें परमेश्वर कार्य करता था (ध्यान दें इब्रानियों 2:4)। [29]फरीसियों ने यीशु पर बालज़बूल की शक्ति के द्वारा आश्चर्यकर्म करने का आरोप लगाया था (मत्ती 12:24), परन्तु वे यह इन्कार नहीं कर सके कि उसने आश्चर्यकर्म किए (लूका 11:15)। [30]जो कोई भी कब्र में देखना चाहता था, वह आसानी से जाकर उसमें देख सकता था (तु. यूहन्ना 20:5)।

[31]जिन दिनों मैं यह पाठ लिख रहा हूं, एक प्रसिद्ध व्यक्ति पर हत्या के आरोप में अभियोग चल रहा है। अमेरिका में रहते हुए इस व्यक्ति के नाम से और उस पर लगे आरोपों से अनभिज्ञ होना लगभग असम्भव होगा। इसी प्रकार, उन दिनों यरूशलेम में लगभग हर ज़ुबान पर यीशु का नाम था, चाहे सकारात्मक अर्थ में हो या नकारात्मक में। [32]फिर पतरस ने उन की ओर इशारा किया *होगा* जो फलस्तीन में रहते थे, परन्तु वह इस सत्य पर बल दे रहा था कि जाति के रूप में यहूदियों ने यीशु को नकार दिया था (ध्यान दें यूहन्ना 1:11)। इसीलिए, वे सभी उसे ''क्रूस पर चढ़ाकर मारने'' के दोषी थे, चाहे वे कहीं भी रहते हों। [33]मूल शास्त्र में ''विधिहीन मनुष्य'' है जो सम्भवत: उन लोगों को कहा गया है जो परमेश्वर के नियम से विहीन हैं (अर्थात अन्यजातियां)। वास्तव में रोमी सिपाहियों ने यीशु को क्रूस पर टांगा, परन्तु ऐसा करके वे यहूदी लोगों की इच्छा को ही अंजाम दे रहे थे। इसलिए पतरस ने उन्हें कहा, ''तुम ने उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला।'' [34]बाइबल के कुछ विषय परमेश्वर के पूर्वज्ञान के विषय से अधिक चुनौती भरे हैं। बाइबल का यह सत्य कि परमेश्वर उन सब बातों को जानता है, जो अभी हुई भी नहीं, मनुष्य के स्वतन्त्र स्वभाव से कैसे मेल खा सकता है? मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि परमेश्वर सब कुछ जानता है, इसलिए यह तथ्य कि वह जानता है कि क्या होने वाला है, किसी के व्यक्तिगत दायित्व को समाप्त नहीं कर देता। ज्ञात रहे कि हम तो इस समस्या से जूझते हैं, किन्तु पतरस और उसके सुनने वालों को इस विरोधाभास से कोई कठिनाई नहीं हुई। [35]याद रखें कि जब यीशु मरा तो उसके पीछे चलने वालों को लगा था कि सब कुछ खो गया, जबकि यीशु ने उन्हें पहले ही अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में कई बार बताया था (मरकुस 8:31; 9:12, 31; 10:33; लूका 17:25; 18:31-33)। [36]यीशु द्वारा एक *सेवक* के रूप में *दुख झेलने* (भविष्यवक्ताओं की बातों के अनुसार) पर पतरस के दूसरे लिखित प्रवचन में अधिक ज़ोर दिया गया है (तु. 3:18)। प्रेरितों 2:40 से संकेत मिलता है कि पतरस ने अपने पहले प्रवचन में जो कुछ कहा हमारे पास उसका केवल संक्षिप्त रूप ही है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका का यह प्रयास रहा कि एक बार बताई गई बात को दोहराया न जाए, बल्कि बाद में उसकी अतिरिक्त जानकारी दी जाए। अपने पहले प्रवचन में पतरस ने संभवत: वही सब कहा जो उसने दूसरे प्रवचन में (प्रेरितों 3) और कुरनेलियुस के परिवार में दिए संदेश में कहा था (प्रेरितों 10)। [37]यीशु के पुनरुत्थान में विश्वास न रखने वालों के लिए आज भी इस प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। मसीहियत का विनाश करने के लिए, इन अनुभवहीन युवकों के उस आंदोलन के शत्रुओं को केवल यीशु के शरीर को ही तो प्रस्तुत करना था। परन्तु वे नहीं कर सके। सब लोगों को मालूम था कि यह सुनिश्चित

करने के लिए कि यीशु की लाश चोरी न हो जाए, उस समय हर सम्भव कदम उठाए गए थे। आम लोगों को भी पता था कि अगली सुबह, कब्र खाली थी। यीशु के शरीर का क्या हुआ? यीशु के मित्र उसे उठाकर नहीं लेजा सकते थे, यीशु के शत्रु भी नहीं ले गए होंगे। फिर भी, वह वहां नहीं था। वस्तुत:, पतरस ने उनसे कहा कि इस पहेली का उत्तर आसान था: यीशु जी उठा था जैसा कि उसने पहले ही भविष्यवाणी की थी। [38]जन्म देने में समस्याएं आ सकती हैं, परन्तु सामान्य परिस्थितियों में, यह बात सत्य है। [39]यदि जी उठने का कोई और प्रमाण न भी होता, तो भी प्रेरितों के जीवनों में आया नाटकीय परिवर्तन ही पर्याप्त प्रमाण था। इस परिवर्तन के आने का कारण इसके सिवा कोई और हो ही नहीं सकता कि उन्होंने जी उठे प्रभु को अपनी आंखों से देखा था। [40]प्रेरितों 3 में दिए संदेश में पतरस ने मूसा, यशायाह और अन्यों की भविष्यवाणियों का हवाला दिया। इस प्रथम संदेश में पतरस ने और भी भविष्यवाणियों का हवाला दिया होगा जिसे लूका ने लिखा नहीं। परन्तु, इस संदेश में पतरस का *मुख्य* आकर्षण *दाऊद* की लिखी बातें थीं।

[41]भजन संहिता 16:8-11. पतरस ने सप्तति अनुवाद से उद्धृत किया, सो आपको लगेगा कि यह पुराने नियम के शास्त्र से कुछ भिन्न है (जिन्हें इब्रानी भाषा से अनुवाद किया गया।) [42]मूल शास्त्र में ''प्राण'' के लिए शब्द स्यूक है। [43]मूल शास्त्र में शब्द ''गेहन्ना'' (दुष्टों का अनन्त निवास; अर्थात, नरक) नहीं, बल्कि ''अधोलोक'' है। शब्दावली में देखिए ''अधोलोक'' और ''नरक''। [44]दाऊद के लिए यह असाधारण शब्द इस्तेमाल किया गया। शायद पतरस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि दाऊद इस्राएल के आध्यात्मिक पिताओं में से था, या शायद यह शब्द इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाने के लिए था कि दाऊद राजवंश का संस्थापक था। [45]1 राजा 2:10 और नहेमायाह 3:16 पर ध्यान दें। हेरोदेस ने दाऊद की कब्र के प्रवेश द्वार पर सफेद संगमरमर का एक स्मारक बनवाया था। नगर में यह दर्शनीय-स्थल था। [46]दाऊद के जीवन का यह आकर्षक पहलू है जिसे पुराने नियम में से दाऊद की कहानी का अध्ययन करते समय चूक जाना बड़ा आसान है। पहला शमूएल 16:13 यह स्पष्ट कर देता है कि प्रभु का आत्मा दाऊद पर आया (2 शमूएल 23:2 भी देखिए), परन्तु पुराने नियम में दाऊद के लिए कहीं भी शब्द ''भविष्यवक्ता'' का प्रयोग नहीं हुआ। परन्तु, यहूदियों को मालूम था कि, दाऊद एक नबी है और नये नियम में, भजन संहिता के हवाले पुराने नियम की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक दिए गए हैं। [47]भजन संहिता 132:11 भी देखिए। 2 शमूएल 7 की प्रतिज्ञाएं सुलेमान के शासन में दाऊद के वंश में आंशिक तौर पर पूरी हो गईं जो उसके बाद यहूदा के दक्षिणी राज्य में उसके सिंहासन पर बैठा। परन्तु, सम्पूर्ण और अन्तिम रूप में वे यीशु में ही पूरी हुईं (जो कि दाऊद के वंश में से था, मत्ती 1:1-16) जब वह स्वर्ग में चढ़कर पिता के दाहिने हाथ जा बैठा (2:33)। [48]प्रेरितों के काम में शब्द ''मसीह'' का उपयोग यहां पहली बार हुआ है। ''मसीह'' अथवा ''ख्रिस्तुस'' इब्रानी शब्द ''Messiah'' का यूनानी रूप है। दोनों का अर्थ ''अभिषिक्त'' है। शब्दावली में देखिए ''मसीह''। [49]ज़रूरी नहीं कि जो कुछ दाऊद ने लिखा, वह उसे पूरे का पूरा समझता हो। भविष्यवक्ता, अक्सर आत्मा की प्रेरणा से कई बातें कह देते थे जिनकी पूरी समझ वर्षों तक उनको भी नहीं आती थी, जब तक उनके शब्दों का अर्थ आत्मा की प्रेरणा से कोई लेखक या वक्ता न करे। [50]यीशु की देह कब्र में एक पूरा दिन और शेष दो दिनों का कुछ भाग रही। यहूदी गणना के हिसाब से ये तीन दिन ही थे।

[51]बाइबल में कुछ लोगों के मृतकों में से जी उठने के बारे में बताया गया है, परन्तु कब्र और अधोलोक (हेडिस) से उनका निकलना थोड़ी देर के लिए था, क्योंकि वे सभी लोग फिर मर गए थे। इस प्रकार फिर से उनके शरीर कब्र में ''बन्दी'' हो गए। केवल यीशु ही अकेला है जो फिर कभी न मरने के लिए मृतकों में से जी उठा। [52]जहां तक इस संसार का सम्बन्ध है, इसमें यीशु ने उनके साथ दुख और कष्टों का वायदा किया था (यूहन्ना 15:18-21)। जिस कष्ट के बारे में यीशु ने पहले ही बता दिया था कि वह शीघ्र ही आरम्भ होने वाला था (प्रेरितों 4:1-3)। अन्त में, जितने भी अब पतरस के सामने खड़े सुन रहे थे, उनमें से एक को छोड़ कर शेष सभी ने अपने विश्वास के कारण मारे जाना था। (आरंभिक परम्परा के अनुसार, यूहन्ना को छोड़, जिसे पतमुस के टापू में देश-निकाला दिया गया था, सभी प्रेरित शहीद हुए)। [53]यीशु ने अपने शत्रुओं से बात करते हुए पहले ही यह उद्धरण दिया था (मत्ती 22:43)। आरम्भिक मसीही लेखकों की यह पहली पसन्द थी (1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20, 22; इब्रानियों 1:13; 5:6-10)। [54]यूनानी शास्त्र में दोनों

जगह ''प्रभु'' के लिए शब्द कुरियोस का इस्तेमाल किया गया है। इब्रानी शास्त्र में भजन संहिता 110:1 में पहले शब्द ''यहोवा'' या ''यावेह'' और फिर ''अदोनाई'' (''प्रभु'') शब्द का इस्तेमाल हुआ है। यद्यपि पतरस यूनानी अनुवाद को उद्धृत कर रहा था, तो भी अंग्रेज़ी [अनुवाद KJV के] अनुवादकों ने यह ध्यान देना उचित समझा कि मूल में पवित्र आत्मा के मन में दोनों शब्द थे।[55]नये नियम में दोबारा न तो ''दाऊद का सिंहासन'' और न ही इसके समान किसी शब्द का इस्तेमाल हुआ। यहां से, हम केवल परमेश्वर/यीशु का सिंहासन ही पढ़ते हैं।[56]प्रिमिलेनियलिस्टों की शिक्षा है कि यीशु इस पृथ्वी पर वापस आएगा, यरूशलेम में अपना राज्य स्थापित करेगा, और सांसारिक सिंहासन (जिसे वे ''दाऊद का सिंहासन'' कहते हैं) पर एक हज़ार वर्ष तक राज्य करेगा। वे यह नहीं समझ पाते कि मसीह ने तो पहले ही अपना राज्य स्थापित कर लिया है, वह तो दाऊद के सिंहासन पर बैठकर राज्य कर रहा है, और उसका सिंहासन धरती पर नहीं, स्वर्ग में है।[57]''परमेश्वर ने ...ठहराया'' शब्दों का अर्थ यह कदापि नहीं कि पुनरुत्थान से पूर्व यीशु मसीह नहीं था। अपने पुनरुत्थान से पूर्व यीशु ने माना था कि वह मसीह है (मरकुस 14:61, 62)। ''परमेश्वर ने ... ठहराया'' का अर्थ है कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिला कर सारी मनुष्यजाति पर *प्रकट कर दिया* कि वह ही मसीह है (रोमियों 1:4)।[58]यह तुलना मैंने पहली बार कई वर्ष पूर्व ओ.पी. बेअर्ड से सुनी।

प्रेरितों के काम में मनपरिवर्तन के उदाहरण					
प्रचार हुआ	**विश्वास किया**	**मन फिराया**	**अंगीकार किया**	**बपतिस्मा लिया**	**उद्धार पाया**
यहूदियों में प्रेरितों 2	''उनके हृदय छिद गए'' (पद 37)	''मन फिराओ'' (पद 38)	''यीशु के नाम से [में]'' (पद 38)	''बपतिस्मा ले'' (पद 38) ''बपतिस्मा लिया'' (पद 41)	''अपने पापों की क्षमा के लिए'' (पद 38)
सामरियों में प्रेरितों 8	''जब उन्होंने ... प्रतीति की'' (पद 12)			''तो ...बपतिस्मा लेने लगे'' (पद 12)	
खोजे को प्रेरितों 8	[''यदि तू ... विश्वास करता है''] (पद 37)		[''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'' (पद 37)]	''बपतिस्मा'' (पद 36) ''उसे बपतिस्मा दिया'' (पद 38)	''आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया'' (पद 39)
शाऊल को प्रेरितों 9; 22; 26		उपवास और प्रार्थना (9:9, 11)	''हे प्रभु'' (9:5)	''बपतिस्मा लिया'' (9:18) ''बपतिस्मा ले'' (22:16)	''अपने पापों को धो डाल'' (22:16)
कुरनेलियुस के घर प्रेरितों 10; 11	''उस पर विश्वास करेगा'' (10:43)	''जीवन के लिए मन फिराव'' (11:18)		''बपतिस्मा''(10:47); ''आज्ञा दी कि ... बपतिस्मा दिया जाए'' (10:48)	''पापों की क्षमा'' (10:43)
लुदिया प्रेरितों 16				''बपतिस्मा लिया'' (पद 15)	''तू ... उद्धार पाएगा'' (पद 31); ''आनन्द किया'' (पद 34)
दारोगे के पास प्रेरितों 16	''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर'' (पद 31); ''विश्वास करके'' (पद 34)	''उनके घाव धोए'' (पद 33)		''बपतिस्मा लिया'' (पद 33)	
कुरिन्थियों में प्रेरितों 18	''विश्वास लाए'' (पद 8)			''विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया '' (पद 8)	

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनपरिवर्तनों का एक चार्ट